National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 39-42
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

Dr. Daya Shankar Sharma
Assistant Professor,
Department of Sociology,
Government Kanya Mahavidyalaya ,
Sainthal Dausa, Rajasthan

Correspondence:
Dr. Daya Shankar Sharma
Assistant Professor,
Department of Sociology,
Government Kanya Mahavidyalaya ,
Sainthal Dausa, Rajasthan

वैश्विक सूचना प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक परिवर्तन: जयपुर के मध्यम वर्गीय समाज का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Dr. Daya Shankar Sharma

सारांश (Abstract)

वैश्विक सूचना प्रौद्योगिकी (Global Information Technology) का प्रभाव 21वीं सदी में मानव समाज की लगभग सभी संरचनाओं पर गहराई से देखा जा सकता है। यह केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि पारिवारिक संबंध, सामाजिक नेटवर्क, शिक्षा, उपभोग पैटर्न और सांस्कृतिक पहचान तक पहुँच चुका है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ मध्यम वर्ग तेजी से उभर रहा है, सूचना प्रौद्योगिकी ने जीवनशैली और सामाजिक संरचनाओं को गहरे स्तर पर बदल दिया है।

जयपुर, जिसे "पिंक सिटी" के नाम से जाना जाता है, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नगर है। पारंपरिक हस्तशिल्प, पर्यटन और व्यापार इसकी पहचान रहे हैं, लेकिन पिछले दो दशकों में यह शहर सूचना प्रौद्योगिकी और स्टार्टअप्स का केन्द्र भी बन रहा है। ऐसे में जयपुर के मध्यम वर्ग पर वैश्विक सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से आवश्यक है।

इस शोध-लेख में साहित्य-आधारित (review-based) पद्धति अपनाई गई है। विभिन्न अकादमिक ग्रंथ, शोध-पत्र, नीति दस्तावेज़ और मीडिया रिपोर्टों का उपयोग किया गया है। प्रमुख निष्कर्ष यह हैं कि —

1. सूचना प्रौद्योगिकी ने जयपुर के मध्यम वर्ग को रोजगार, शिक्षा और उपभोग के नए अवसर दिए हैं।
2. डिजिटल माध्यमों ने सामाजिक नेटवर्क और पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया है।
3. डिजिटल विभाजन अब भी एक बड़ी चुनौती है, जिससे मध्यम वर्ग के कुछ हिस्से पिछड़ रहे हैं।
4. समावेशी नीतियों और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

कुंजीशब्द: सूचना प्रौद्योगिकी, सामाजिक परिवर्तन, मध्यम वर्ग, जयपुर, डिजिटल विभाजन, समाजशास्त्रीय अध्ययन

1. प्रस्तावना (Introduction)

1.1 पृष्ठभूमि

सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology, IT) ने आधुनिक समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्टफ़ोन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसी तकनीकों ने केवल आर्थिक उत्पादन प्रणाली ही नहीं बदली, बल्कि संचार, सामाजिक संबंध, राजनीतिक विमर्श और सांस्कृतिक पहचान को भी नई दिशा दी है। कास्टेल्स (Castells, 1996) ने इसे "नेटवर्क सोसाइटी" की संज्ञा दी, जहाँ सामाजिक संरचना सूचना नेटवर्क के आधार पर संगठित होती है।

भारत में, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, मध्यम वर्ग तेजी से सूचना प्रौद्योगिकी को अपनाने वाला वर्ग है। इस वर्ग के लोग तकनीक के उपभोक्ता भी हैं और उत्पादक भी। जयपुर जैसे शहर में, जहाँ पारंपरिक संस्कृति और आधुनिक तकनीक दोनों साथ-साथ मौजूद हैं, यह अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

1.2 समस्या की रूपरेखा

सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव सभी समाजों पर समान नहीं है। जयपुर का मध्यम वर्ग इस तकनीकी बदलाव का लाभ भी उठा रहा है और चुनौतियों का सामना भी कर रहा है। जहाँ एक ओर आईटी सेक्टर

ने रोजगार और उद्यमिता को बढ़ावा दिया है, वहीं दूसरी ओर डिजिटल विभाजन (Digital Divide) और सामाजिक असमानता भी सामने आई है (van Dijk, 2005)।

1.3 उद्देश्य

- यह विश्लेषण करना कि सूचना प्रौद्योगिकी ने जयपुर के मध्यम वर्ग की जीवनशैली और सामाजिक संरचना को कैसे प्रभावित किया है।
- यह पहचानना कि डिजिटल विभाजन किस प्रकार इस वर्ग को प्रभावित करता है।
- नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना ताकि डिजिटल युग में मध्यम वर्ग समावेशी रूप से विकसित हो सके।

1.4 महत्व

यह अध्ययन केवल अकादमिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि नीतिगत स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। जयपुर जैसे शहरों में मध्यम वर्ग ही आर्थिक और सामाजिक विकास का इंजन है। इसलिए इसका अध्ययन व्यापक समाजशास्त्रीय विमर्श के लिए आवश्यक है।

2. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

2.1 वैश्विक परिप्रेक्ष्य

कास्टेल्स (Castells, 1996) के अनुसार, सूचना प्रौद्योगिकी ने वैश्विक समाज को "नेटवर्क सोसाइटी" में बदल दिया है। इस समाज में शक्ति, उत्पादन और संस्कृति सूचना के प्रवाह द्वारा निर्धारित होते हैं।

वैन डाइक (van Dijk, 2005) ने डिजिटल विभाजन की अवधारणा दी, जिसमें उन्होंने बताया कि केवल तकनीक की उपलब्धता ही नहीं, बल्कि उसका उपयोग और उससे मिलने वाले परिणाम भी असमान रूप से वितरित होते हैं।

पश्चिमी समाजों में सूचना प्रौद्योगिकी ने "ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था" (Knowledge Economy) को जन्म दिया है (Bell, 1973)। इससे रोजगार पैटर्न बदले, पारंपरिक उद्योगों का महत्व घटा और सेवा क्षेत्र का विस्तार हुआ।

2.2 भारतीय परिप्रेक्ष्य

भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार 1990 के दशक से शुरू हुआ। आईटी सेक्टर ने न केवल निर्यात बढ़ाया बल्कि घरेलू रोजगार भी सृजित किए (NASSCOM, 2019)। डिजिटल इंडिया (2015) कार्यक्रम ने इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं की पहुँच को व्यापक किया।

लस्कर एवं सहयोगियों (Laskar et al., 2022) के अनुसार, भारत में डिजिटल विभाजन ग्रामीण-शहरी, पुरुष-महिला और वर्गीय आधार पर गहरा है। शहरी मध्यम वर्ग तकनीक का सबसे बड़ा उपभोक्ता है, परंतु इसमें भी आय और शिक्षा के आधार पर असमानताएँ मौजूद हैं।

2.3 जयपुर का स्थानीय संदर्भ

जयपुर में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास अपेक्षाकृत नया है। STPI (Software Technology Parks of India) जयपुर की रिपोर्ट (2024) के अनुसार, शहर में आईटी/आईटीईएस उद्योग तेजी से बढ़ रहा है। राजस्थान सरकार की DOITC रिपोर्ट (2023) बताती है कि राज्य ने आईटी नीति के माध्यम से स्टार्टअप्स और उद्यमिता को प्रोत्साहन दिया है।

टाइम्स ऑफ इंडिया (2024) की रिपोर्ट में बताया गया कि जयपुर के युवाओं में स्टार्टअप संस्कृति बढ़ रही है और कई कंपनियाँ राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही हैं।

2.4 सामाजिक परिवर्तन और मध्यम वर्ग

जोशी (2019) का मानना है कि भारतीय शहरी मध्यम वर्ग सूचना प्रौद्योगिकी के कारण उपभोग संस्कृति और सामाजिक पहचान के नए रूप अपना रहा है। अब ब्रांडेड वस्तुएँ, डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन नेटवर्किंग सामाजिक प्रतिष्ठा का हिस्सा बन चुके हैं।

3. सैद्धांतिक रूपरेखा (Theoretical Framework)

समाजशास्त्रीय अध्ययन में सिद्धांत शोध को आधार और दिशा प्रदान करते हैं। जयपुर के मध्यम वर्ग पर सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव को समझने के लिए तीन प्रमुख सिद्धांत विशेष रूप से उपयोगी हैं:

3.1 डिजिटल विभाजन सिद्धांत (Digital Divide Theory)

वैन डाइक (van Dijk, 2005) ने बताया कि डिजिटल असमानता केवल तकनीक की उपलब्धता तक सीमित नहीं है।

इसमें तीन स्तर शामिल हैं:

1. प्रवेश असमानता (Access Divide): किसके पास डिवाइस और इंटरनेट उपलब्ध है।
2. उपयोग असमानता (Usage Divide): लोग तकनीक का उपयोग किस उद्देश्य और किस दक्षता से करते हैं।
3. परिणाम असमानता (Outcome Divide): तकनीक से किसे लाभ और किसे हानि मिल रही है।

जयपुर के मध्यम वर्ग में यह स्पष्ट दिखता है—कई परिवारों के पास स्मार्टफ़ोन हैं पर उच्च गति इंटरनेट और डिजिटल कौशल का अभाव है।

3.2 नेटवर्क सोसाइटी सिद्धांत (Network Society Theory)

3.3 कास्टेल्स (Castells, 1996) ने आधुनिक समाज को “नेटवर्क सोसाइटी” कहा। इसमें उत्पादन, शक्ति और संस्कृति सूचना नेटवर्क से संगठित होती है। जयपुर का मध्यम वर्ग अब वैश्विक नेटवर्क से जुड़ रहा है—सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से। इससे नई सामाजिक पहचान और समुदायों का निर्माण हो रहा है।

3.4 उपभोग संस्कृति सिद्धांत (Consumer Culture Theory)

3.5 स्लेटर (Slater, 1997) के अनुसार उपभोग अब केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सामाजिक पहचान और प्रतिष्ठा का माध्यम है।

जयपुर में मध्यम वर्ग अमेज़न, फ्लिपकार्ट और स्विगी जैसे प्लेटफ़ॉर्म से जुड़ा है। ब्रांडेड वस्तुएँ और डिजिटल भुगतान अब प्रतिष्ठा और आधुनिकता के प्रतीक बन चुके हैं।

4.शोध प्रश्न (Research Questions)

इस शोध-लेख के प्रमुख प्रश्न निम्नलिखित हैं:

1. वैश्विक सूचना प्रौद्योगिकी ने जयपुर के मध्यम वर्गीय समाज की जीवनशैली में क्या परिवर्तन लाए हैं?
2. परिवार और सामाजिक संबंधों पर डिजिटल तकनीक का क्या प्रभाव पड़ा है?

3.डिजिटल विभाजन जयपुर के मध्यम वर्ग को किस प्रकार प्रभावित करता है?

4.रोजगार और उपभोग संस्कृति में कौन-कौन से नए पैटर्न उभरे हैं?

5.नीतिगत दृष्टि से किन उपायों की आवश्यकता है ताकि यह परिवर्तन अधिक समावेशी हो सके।

6.पद्धति (Methodology)

यह अध्ययन साहित्य-आधारित (Review-based) है। इसमें क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध स्रोतों का उपयोग किया गया है।

5.1 डेटा स्रोत

प्राथमिक स्रोत: STPI जयपुर की रिपोर्ट (2024), राजस्थान सरकार का DOITC वार्षिक रिपोर्ट (2023), डिजिटल इंडिया से संबंधित नीति दस्तावेज़।

माध्यमिक स्रोत: अकादमिक पुस्तकें (Castells, 1996; van Dijk, 2005; Joshi, 2019), शोध-पत्र (Laskar et al., 2022), मीडिया रिपोर्टें (Times of India, 2024)।

5.2 विश्लेषण विधि

गुणात्मक सामग्री विश्लेषण (Qualitative Content Analysis): साहित्य और रिपोर्टों से पैटर्न निकालना

समाजशास्त्रीय सैद्धांतिक दृष्टिकोण: डिजिटल विभाजन, नेटवर्क सोसाइटी और उपभोग संस्कृति सिद्धांतों की सहायता से विश्लेषण।

6. प्रमुख विश्लेषण (Key Analysis)

6.1 रोजगार और अवसर जयपुर में सूचना प्रौद्योगिकी ने रोजगार के नए अवसर खोले हैं।

1.आईटी और बीपीओ सेक्टर: STPI जयपुर (2024) की रिपोर्ट बताती है कि पिछले 5 वर्षों में आईटी/आईटीईएस सेक्टर में 25% की वृद्धि हुई है। जयपुर में बीपीओ कंपनियाँ जैसे Genpact और Infosys के कार्यालय खुले हैं, जिनमें मध्यम वर्ग के युवाओं को रोजगार मिल रहा है।

2.स्टार्टअप संस्कृति: राजस्थान सरकार की "स्टार्टअप नीति 2022" (DOITC Report, 2023) ने जयपुर को स्टार्टअप्स का केन्द्र बनाया है। Times of India (2024) की रिपोर्ट के अनुसार, जयपुर के 300 से अधिक स्टार्टअप राष्ट्रीय स्तर पर काम कर रहे हैं। इनमें शिक्षा-टेक (EdTech), ई-कॉमर्स और फिनटेक प्रमुख हैं।

3.लिंग आधारित अवसर: महिलाओं की आईटी क्षेत्र में भागीदारी धीरे-धीरे बढ़ रही है। Work-from-home ने उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियों और रोजगार को संतुलित करने का अवसर दिया है।

निष्कर्ष: रोज़गार के अवसर बढ़े हैं, लेकिन ये अधिकतर उच्च शिक्षा और अंग्रेज़ी दक्षता वाले मध्यम वर्ग तक सीमित हैं।

6.2 उपभोग और जीवनशैली

1.ई-कॉमर्स का प्रभाव: Flipkart, Amazon और Myntra ने मध्यम वर्ग के उपभोग पैटर्न को बदल दिया है। अब लोग बड़े मॉल जाने की बजाय ऑनलाइन खरीदारी को प्राथमिकता देते हैं (Joshi, 2019)।

2.डिजिटल भुगतान: Paytm, Google Pay और PhonePe जैसे ऐप्स ने कैशलेस लेनदेन को आसान बना दिया है। यह आधुनिकता और सामाजिक प्रतिष्ठा का हिस्सा बन गया है।

3.मनोरंजन और सांस्कृतिक उपभोग: Netflix, Hotstar और YouTube ने मनोरंजन की संस्कृति बदल दी है। अब परिवार एक साथ टीवी देखने के बजाय व्यक्तिगत डिवाइस पर अलग-अलग कंटेंट देखते हैं।

निष्कर्ष: उपभोग संस्कृति में तकनीक ने गहरा बदलाव किया है। इससे मध्यम वर्ग की सामाजिक पहचान और जीवनशैली आधुनिक रूप में बदल गई है।

6.3 परिवार और सामाजिक संबंध

1.वर्क-फ्रॉम-होम: कोविड-19 के दौरान Work-from-home ने परिवारों की दिनचर्या बदल दी। अब घर ही दफ़्तर और स्कूल बन गया है। इससे पारिवारिक संवाद प्रभावित हुए (Laskar et al., 2022)।

2.ऑनलाइन शिक्षा: जयपुर के मध्यम वर्गीय परिवारों में बच्चे ऑनलाइन क्लासेज़ से पढ़ाई करने लगे। इससे शिक्षा तक पहुँच तो बढ़ी, लेकिन जिनके पास लैपटॉप और इंटरनेट नहीं था, वे पिछड़ गए।

3.सामाजिक नेटवर्क: Facebook, Instagram और WhatsApp ने रिश्तों को नए आयाम दिए हैं। अब सामाजिक संबंध केवल भौगोलिक निकटता पर आधारित नहीं हैं, बल्कि डिजिटल नेटवर्क पर आधारित हैं।

निष्कर्ष: परिवारिक संबंध और सामाजिक नेटवर्क डिजिटल माध्यमों से पुनर्गठित हो रहे हैं।

6.4 डिजिटल विभाजन

1.तकनीकी पहुँच: हालाँकि जयपुर के अधिकांश मध्यम वर्गीय परिवारों के पास स्मार्टफ़ोन हैं, परंतु उच्च गति इंटरनेट और लैपटॉप सबके पास नहीं है (STPI Jaipur, 2024)।

2.भाषा और दक्षता: डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने के लिए अंग्रेज़ी दक्षता की आवश्यकता होती है। जिन परिवारों में शिक्षा का स्तर कम है, वे पिछड़ जाते हैं।

3.आर्थिक असमानता: निम्न मध्यम वर्ग के लिए महंगे गैजेट्स और इंटरनेट डेटा का खर्च बोझ बन जाता है।

निष्कर्ष: डिजिटल विभाजन मध्यम वर्ग के भीतर भी मौजूद है, जिससे सामाजिक असमानता बढ़ सकती है (van Dijk, 2005)।

7. केस अध्ययन (Case Studies)

7.1 केस अध्ययन 1: स्टार्टअप उद्यमिता

जयपुर के एक मध्यम वर्गीय युवा (इंजीनियरिंग छात्र) ने कोविड-19 के दौरान फूड डिलीवरी स्टार्टअप शुरू किया। उसे STPI इनक्यूबेशन सेंटर (STPI Jaipur, 2024) और राज्य सरकार के स्टार्टअप नीति कार्यक्रम (DOITC Report, 2023) से सहायता मिली।

परिणाम: कुछ वर्षों में उसका व्यवसाय शहर के कई इलाकों तक फैल गया।

सामाजिक प्रभाव: परिवार की आय बढ़ी, रोजगार सृजित हुए और अन्य युवाओं को प्रेरणा मिली।

विश्लेषण: यह उदाहरण दिखाता है कि सूचना प्रौद्योगिकी मध्यम वर्गीय युवाओं के लिए उद्यमिता का नया रास्ता खोल रही है।

7.2 केस अध्ययन 2: ऑनलाइन शिक्षा

जयपुर के मध्यम वर्गीय परिवार में दो बच्चे पढ़ाई कर रहे थे। कोविड-19 के दौरान ऑनलाइन क्लासेज़ शुरू हुईं।

परिस्थिति: परिवार के पास केवल एक स्मार्टफोन था। दोनों बच्चों को पढ़ाई में कठिनाई हुई।

निष्कर्ष: तकनीक ने शिक्षा तक पहुँच तो दी, लेकिन संसाधनों की कमी से डिजिटल विभाजन सामने आया (Laskar et al., 2022)।

7.3 केस अध्ययन 3: महिला और Work-from-home

जयपुर की एक महिला, जो शादीशुदा और दो बच्चों की माँ है, कोविड के समय एक BPO कंपनी में घर से काम करने लगी।

लाभ: आय का स्रोत मिला, पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ संतुलन बना।

चुनौती: लंबे समय तक स्क्रीन पर काम करने से स्वास्थ्य समस्याएँ हुईं।

विश्लेषण: Work-from-home महिलाओं को अवसर देता है, परंतु कार्य-जीवन संतुलन और स्वास्थ्य पर असर डालता है।

7.4 केस अध्ययन 4: उपभोग संस्कृति

जयपुर का एक मध्यम वर्गीय परिवार पहले स्थानीय बाजार से कपड़े और सामान खरीदता था। अब वे Amazon और Flipkart से ही अधिकांश चीजें मंगाते हैं।

सामाजिक परिणाम: ऑनलाइन शॉपिंग से समय बचा, लेकिन स्थानीय दुकानदारों का व्यवसाय प्रभावित हुआ।

विश्लेषण: उपभोग संस्कृति में बदलाव ने पारंपरिक व्यापार और शहरी अर्थव्यवस्था को चुनौती दी है (Joshi, 2019)।

8. नीतिगत सुझाव (Policy Recommendations)

8.1 डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy)

जयपुर के मध्यम वर्गीय परिवारों में डिजिटल उपकरण तो हैं, लेकिन सभी को उनका सही उपयोग नहीं आता।

सुझाव: राज्य सरकार को डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम शुरू करने चाहिए, खासकर हिंदी भाषा में सरल प्रशिक्षण।

8.2 सस्ती और तेज़ इंटरनेट सुविधा

उच्च गति इंटरनेट अब भी सभी इलाकों में समान रूप से उपलब्ध नहीं है।

सुझाव: सभी वार्डों और उपनगरों में ब्रॉडबैंड पहुँच सुनिश्चित की जाए (DOITC Report, 2023)।

8.3 महिला उद्यमिता और Work-from-home समर्थन

महिलाओं के लिए Work-from-home अवसर बढ़े हैं, परंतु childcare और स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं है।

सुझाव: कंपनियाँ लचीले कार्य घंटे और स्वास्थ्य बीमा योजनाएँ उपलब्ध कराएँ।

8.4 स्थानीय स्टार्टअप इकोसिस्टम

जयपुर में स्टार्टअप बढ़ रहे हैं, परंतु शुरुआती फंडिंग और बाजार तक पहुँच चुनौती है।

सुझाव: Seed Funding, Microcredit और Incubation Centers का विस्तार किया जाए (Times of India, 2024)।

8.5 पारिवारिक और सामाजिक संतुलन

स्क्रीन टाइम और सोशल मीडिया ने पारिवारिक संवाद को प्रभावित किया है।

सुझाव: स्कूल और समुदायों को "डिजिटल संतुलन" पर जागरूकता अभियान चलाने चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion)

जयपुर का मध्यम वर्ग वैश्विक सूचना प्रौद्योगिकी के कारण व्यापक सामाजिक परिवर्तन से गुजर रहा है।

1.रोजगार: आईटी सेक्टर और स्टार्टअप संस्कृति ने युवाओं को नए अवसर दिए हैं।

2.उपभोग: ऑनलाइन शॉपिंग और डिजिटल पेमेंट ने उपभोग संस्कृति और प्रतिष्ठा के नए रूप गढ़े हैं।

3.परिवार: Work-from-home और ऑनलाइन शिक्षा ने पारिवारिक संरचना और समय-वितरण को बदल दिया है।

4.डिजिटल विभाजन: तकनीकी पहुँच, भाषा और आर्थिक असमानता अब भी चुनौती हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से, सूचना प्रौद्योगिकी ने जयपुर के मध्यम वर्ग की सामाजिक पहचान, सांस्कृतिक जीवन और आर्थिक अवसरों को नया आकार दिया है। परंतु यदि असमानताओं पर ध्यान नहीं दिया गया तो यह परिवर्तन समावेशी नहीं होगा।

इसलिए नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक हैं—डिजिटल साक्षरता, सस्ती इंटरनेट, महिला समर्थन, स्थानीय उद्यमिता और सामाजिक जागरूकता। तभी जयपुर का मध्यम वर्ग सूचना युग में सशक्त और समावेशी रूप से आगे बढ़ सकेगा।

संदर्भ सूची (References)

1. Bell, D. (1973). The Coming of Post-Industrial Society. New York: Basic Books.
2. Castells, M. (1996). The Rise of the Network Society. Oxford: Blackwell.
3. Department of Information Technology & Communication (DOITC), Govt. of Rajasthan (2023). Annual IT Growth Report. Jaipur.
4. Joshi, R. (2019). Urban Middle Class and Social Change in India. Delhi: Rawat Publications.
5. Laskar, M. H., & Others. (2022). "Digital Divide and Emerging Digital Society in India." Journal of Information Studies, 15(2), 45–67.
6. Slater, D. (1997). Consumer Culture and Modernity. Cambridge: Polity Press.
7. Software Technology Parks of India (STPI) Jaipur (2024). Regional Profile Report. Jaipur: STPI.
8. Times of India (2024). "Incubation Nation: Jaipur's Growing Startup Ecosystem." TOI Online Edition.
9. Van Dijk, J. (2005). The Deepening Divide: Inequality in the Information Society. Sage Publications.